सोचने की बात

गीता भल्ला



आकलनों का अवलोकन के साथ नजदीकी सम्बन्ध है। हर एक शिक्षक के लिए यह बेहद अनिवार्य है कि अपने अन्य कौशलों के साथ, वह अपनी आँख को प्रशिक्षित करना भी सीख जाए ताकि उसके पास किसी चिकित्सक का अभ्यस्त कौशल हो। इस अवलोकन को पूर्णत: वैज्ञानिक श्रेणी में ही रखा जाता है। इसे फिनोमिनोलॉजिकल (सिद्धान्त को प्रयोग या अवलोकन पर लागू करना) अवलोकन भी कहा जाता है जिसमें व्यक्ति तथ्यों को अपनी राय, भावनाओं, पिछले ज्ञान, अवधारणाओं आदि से मुक्त रखता है। बच्चा कैसे चलता है, कैसे बोलता है, कैसे पेंसिल पकड़ता है, खाने के लिए कोई फल उठाता है, उसके सिर का आकार, उसके शरीर की संरचना, इन सबका अवलोकन करने से बच्चे की एक ऐसी तस्वीर बनती है जो आपको एक कहानी देती है और जो किसी भी आकलन से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण और सटीक होती है।

जब कोई शिक्षक या माता/पिता बच्चे को प्रेम से देखता है, तो कई सवालों के जवाब मिल जाते हैं। आप पहले एक नाता बनाते हैं और फिर कोई दृष्टिकोण निर्मित करते हैं। यांत्रिक और अवैयक्तिक ढंग को दूर रख दिया जाता है और जब आप अपने दिल में सवाल पूछते हैं, कि आप कौन हैं, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ और आप मेरे लिए क्या लाते हैं, तो आपको कई उत्तर मिल जाते हैं। यह खासतौर पर उन बच्चों के लिए सही है जो ऑटिज्म (स्वलीनता) रोग की श्रेणी में आते हैं जिनके मामले में कोई भी आकलन आपको सारे उत्तर देने के लिए पर्याप्त नहीं होता।

फिर आप बच्चे के सामान्य और श्रेणीगत (टाइपोलोजिकल) स्वरूपों को समझना शुरू कर देते हैं।

इस आत्मावलोकन से यह होता है कि हम निष्कर्षों पर छलाँग लगाने के बजाय चीजों को वैसा ही देखते हैं जैसी वे होती हैं।

जब मैं किसी कक्षा में दाखिल होती हूँ, तो बच्चों पर 'इनमें क्या कमी है' वाली निगाह डालने के बजाय, उनके नजदीक जाते समय मेरी दृष्टि में यह उत्सुकता होती है कि मैं कैसे बता सकती हूँ कि अगर इस बच्चे के साथ अलग ढंग से, जैसे कि मेरी तरफ से सहयोगपूर्ण धैर्य के साथ, व्यवहार किया जाए तो वह कैसा प्रदर्शन करेगा?

इसके विपरीत अर्थात बच्चे के प्रदर्शन का आकलन करके अंक लिख देने या बच्चे को किसी खाँचे में डाल देने का परिणाम चरम स्थिति में खतरनाक तो हो ही सकता है और कम से कम भ्रामक तो होता ही है। बच्चों के कार्य करने में होने वाले बदलावों ने दिखाया है कि कभी-कभी वे शिक्षकों के साथ सहयोग नहीं करते और कभी-कभी उपयोग की जाने वाली सामग्री से परिचय न होने के कारण उनके प्रदर्शन में भिन्नता होती है।

डोनट को देखो, उसके छेद को नहीं :

अक्षमताओं वाले सभी बच्चों में विकास का कोई ऐसा क्षेत्र होता है जो उम्र के मुताबिक नहीं होता। सेरिब्रल पाल्सी (प्रमस्तिष्क पक्षाघात) से पीड़ित बच्चे में शारीरिक वाली कमियाँ हो सकती हैं, पर उसकी सामाजिक जरूरतें, उसकी संज्ञानात्मक क्षमताएँ और उसका स्वयं का बोध आदि उसके बाकी साथियों की तरह ही हो सकते हैं। तो उसे ऐसी पाठ्यचर्या और शिक्षा देना जो हल्की कर दी गई हो और कहीं ज्यादा छोटे बच्चे के लिए उपयुक्त हो, उसके लिए कितना घातक है। इसलिए सभी बच्चे, पहले बच्चे होते हैं और अक्षमता उनका एक हिस्सा भर होती है। यह ऐसी बात है जो उन्हें परिभाषित करने के अपने प्रयास में हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।

ठप्पे : विशेषज्ञ सूजन हॉल कहती हैं, "जब ठप्पे किसी व्यक्ति की मनुष्यता और वैयक्तिक्ता का स्थान ले लेते हैं तो वे खतरनाक होते हैं, पर वे तब अमूल्य होते हैं जब वे इन बातों को तय करने की बिलकुल ठीक-ठीक तकनीक निकाल लेते हैं कि किस बच्चे को क्या, कब, कहाँ, क्यों और कैसे चाहिए!"

__गीता__ चेन्नै के कैलाइडोस्कोप लर्निंग सैण्टर की प्राचार्य हैं। उनके पास स्पेशल ऐजुकेशन में बी.एड. की डिग्री है और इसके अलावा जटिल से लेकर हल्की अक्षमताओं वाले अलग–अलग प्रकार के बच्चों के साथ काम करने का 30 वर्षों से भी ज्यादा का अनुभव है। उनके पास बाल विकास और मनोविज्ञान का भी अच्छा–खासा अनुभव है। उनका प्रशिक्षण स्थल स्पास्टिक सोसायटी ऑफ कर्नाटक रहा है जहाँ उन्हें अलग–अलग सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों के विशेष जरूरतों वाले बच्चों के साथ दस से भी ज्यादा वर्षों तक काम करने का मौका मिला। उनसे gitabhalla@gmail.com *पर सम्पर्क किया जा सकता है। __अनुवाद__ : भरत त्रिपाठी*